



आशा संगंधा

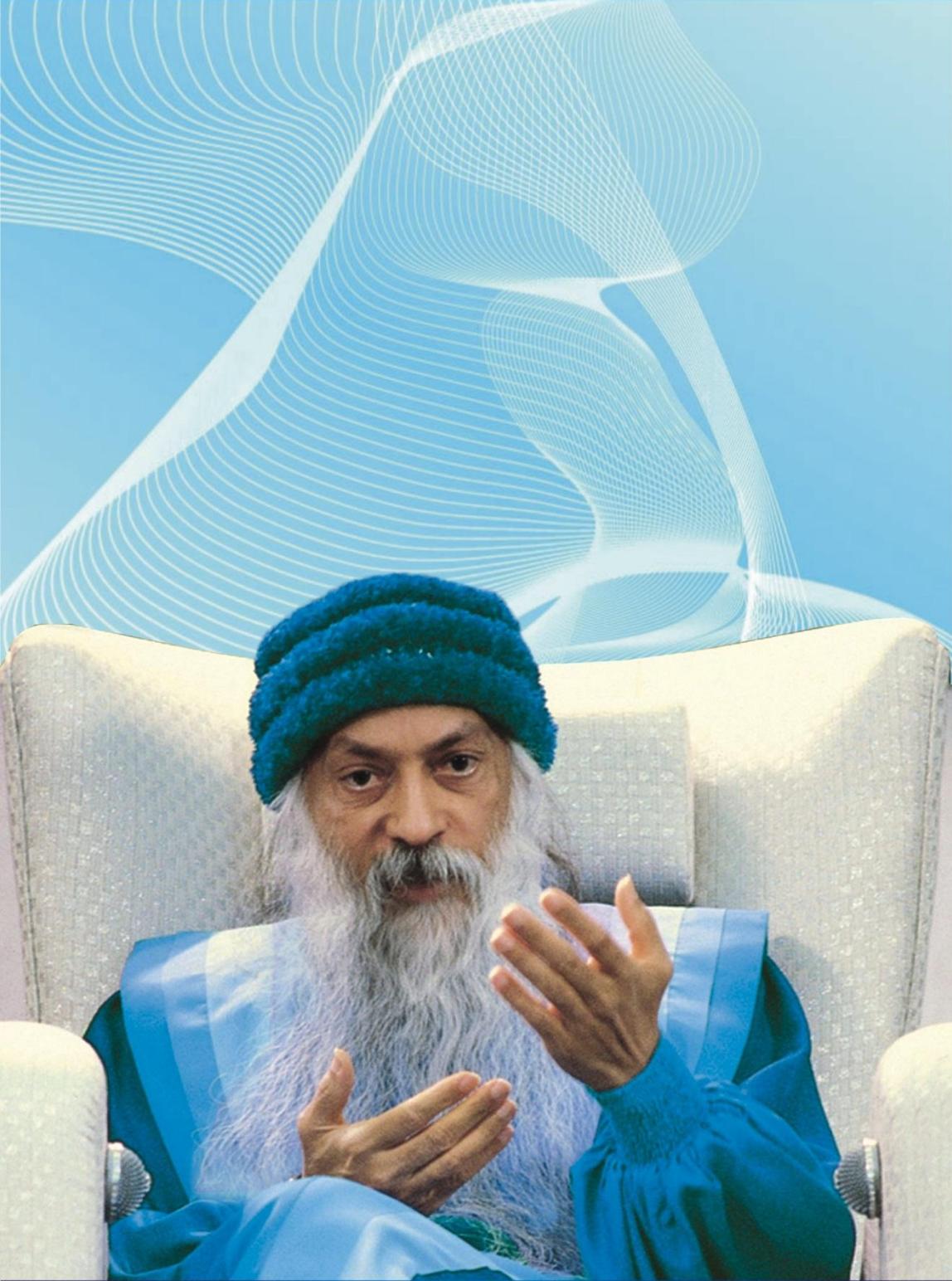
फरवरी 2022



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका



भय एवं भय-मुक्ति का उपाय

दुर्बुद्धि या दुर्मति क्या है ?

भविष्य की अनिश्चितता, असुरक्षा में शांतिपूर्ण होने का उपाय

ओशो सुगंधा

वर्ष-1/अंक-2/फरवरी 2022



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरु ओशो के चरणों में समर्पित

प्रेरणास्रोत

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं माँ अमृत प्रिया

संपादन एवं संकलन

माँ मोक्ष संगीता

अन्य सहयोग

मस्तो बाबा

कला एवं साज सज्जा

मनोज बजाज



contact@oshofragrance.org

चेतन के आयाम में वसंत

जरा गौर से सुनो, जगत में चहुं ओर संगीत बिखरा हुआ है। कोयल गीत गाती है, पपीहा लयबद्ध आवाज में पुकारता है। झरने गुनगुनाते हुए गिरते हैं, सरिताएं कलकल ध्वनि के संग आगे बढ़ती हैं। सागर में लहरों का उदघोष अनवरत गूंजता रहता है। सब तरफ जीवन की धड़कन है- हृदय मयूर मस्त होकर नाच रहा है! धरती सृज की परिक्रमा करती है, रक्त धमनियों और शिराओं में परिवहन करता है। आती-जाती सांस स्वर और ताल में चलती हैं तब कहीं प्राण स्पंदित होते हैं।

कोई कहीं पशु या पंक्षी संगीत विद्यालय में प्रशिक्षण लेने नहीं जाता। एक आदमी को ही न जाने क्या हो गया है कि वह गाने-नाचने से डरने लगा है, ट्रेनिंग लेता है। मनुष्य सहज-स्वाभाविक नहीं रह गया। प्रकृति के संग उसका नाता टूट गया है। जिसे परमात्मा की तरफ यात्रा करनी हो, उसे सबसे पहले तो प्रकृति के संग सामंजस्य बनाना होगा। अपनी भूली-बिसरी नैसर्गिक देन को याद करना होगा। गंभीरता छोड़कर बालवत प्रफुल्लित होना होगा।

धर्म के नाम पर मानसिक रूप से रुग्ण लोगों ने मंदिर-मस्जिदों को भी उदास बना दिया है। तीर्थस्थानों को अपवित्र कर दिया है। जरूरत आन पड़ी है कि हंसता, नाचता, गाता, गुनगुनाता अध्यात्म फिर धरती पर अवतरित हो। हम ओशो के संन्यासियों को अपने जीवन में तो उतारना ही है, संभावना है कि सारी पृथ्वी उत्सव के उस रंग में रंग जाए।

कबीर साहब का प्रसिद्ध दोहा है-

**दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय।।**

न जाने कैसे सारे जगत में त्यागवादी, दुखवादी, गंभीर, लोगों ने धर्म को आच्छादित कर लिया। यद्यपि गीत गाते, गुनगुनाते, प्रफुल्लित, नाचते हुए, प्रकृति की गोद में जीते हुए संत बारंबार हुए, किंतु विराट मनुष्यता पर असहज, मानसिक रूप से रुग्ण, उदास साधु-महात्माओं का प्रभाव जारी रहा। 'सुख में सुमिरन' का संदेश समस्त बुद्धों ने एवं भक्तों ने दिया, लेकिन पृथ्वी पर उनके उपदेशानुसार स्वस्थ-धर्म स्थापित न हो सका। क्या अब समय नहीं आ गया है कि हम अतीत की भूलों से चेतें, और एक नई दिशा में अध्यात्म को मोड़ें?

**आध्यात्मिक ऋतुराज के प्रणेता ओशो के उपदेशानुसार
जीने से निश्चित ही चेतना के आयाम में वसंत आ सकता है।**

- मा मोक्ष संगीता

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय

मासिक ई-पत्रिका की

विशेषताएं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिन्ह इस पत्रिका में आपको
विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से
सक्रिय हो जाएंगे



ऑडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही आप
संगीत का ऑडियो सुन अथवा
डाउनलोड कर सकते हैं



वीडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही आप
वह वीडियो देख सकते हैं



व्हाट्स
ऐप

इस बटन को स्पर्श करते ही आप
व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित व्यक्ति
को संदेश भेज सकते हैं



गुगल
मैप

इस बटन को स्पर्श करते ही
आपके फ़ोन पर उस जगह का
गुगल मैप खुल जाएगा



पुस्तक

इस बटन को स्पर्श करते ही आप
PDF में पढ़ अथवा डाउनलोड कर
सकते हैं



वेब
साइट

इस बटन को स्पर्श करते ही आप
सीधे उस वेब साइट पर जा सकते
हैं

अनुक्रम

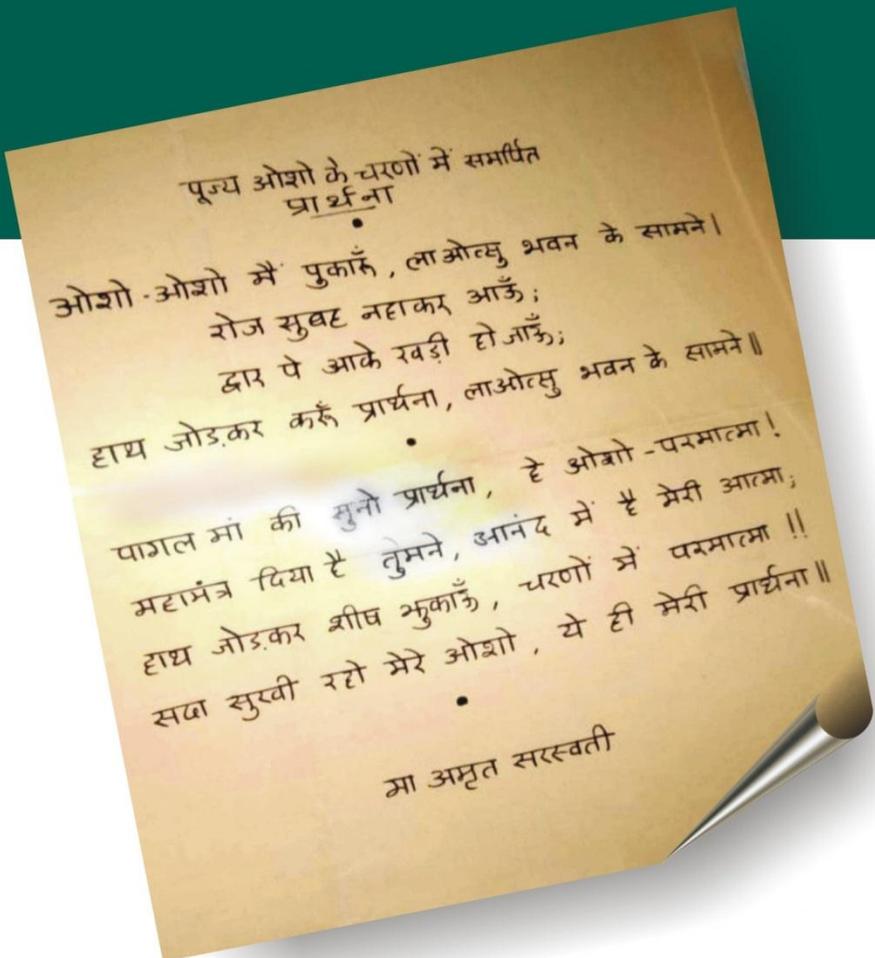
| | |
|---|----|
| 1. पूज्य ओशो के चरणों में समर्पित प्रार्थना | 06 |
| 2. भय एवं भय-मुक्ति का उपाय | 07 |
| 3. ओशो द्वारा हस्तलिखित पत्र | 12 |
| 4. प्रेम के परिष्कार हेतु श्रवणीय ओशो प्रवचन | 13 |
| 5. ताजगी से भरने वाला गहरी निद्रा का प्रयोग | 14 |
| 6. एक कप चाय | 15 |
| 7. जीवन का लक्ष्य | 17 |
| 8. ओंकार साधना शिविर लिंक | 19 |
| 9. डिजिटल रूप से उपलब्ध साहित्य | 20 |
| 10. माँ अमृत प्रिया जी के भजन | 21 |
| 11. दुर्बुद्धि या दुर्मति क्या है ? | 22 |
| 12. भविष्य की अनिश्चितता, असुरक्षा में शांतिपूर्ण होने का उपाय | 24 |
| 13. Offline ध्यान कार्यक्रम | 25 |
| 14. Online ध्यान कार्यक्रम | 26 |
| 15. शिविर की झलकियां | 27 |
| 16. तुम आज मेरे संग हंस लो | 29 |
| 17. कुछ गीत स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी की डायरी से | 30 |
| 18. महापरिनिर्वाण दिवस पर विशेष | 31 |
| 19. अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र | 32 |

पूज्य ओशो के चरणों में समर्पित

ओशो-ओशो मैं पुकारूँ, लाओत्सु भवन के सामने।
 रोज सुबह नहाकर आऊँ;
 द्वार पे आके खड़ी हो जाऊँ;
 हाथ जोड़कर करूँ प्रार्थना, लाओत्सु भवन के सामने॥

पागल मां की सुनो प्रार्थना, हे ओशो-परमात्मा!
 महामंत्र दिया है तुमने, आनंद में है मेरी आत्मा;
 हाथ जोड़कर शीघ्र झुकाऊँ, चरणों में परमात्मा!!
 सदा सुखी रहो मेरे ओशो, ये ही मेरी प्रार्थना!!

- मा अमृत सरस्वती



ओशो जी की माता मा अमृत सरस्वती द्वारा हस्तलिखित प्रार्थना पत्र

भय एवं भय-मुक्ति का उपाय



प्रश्न : भय क्या है ? और भय-मुक्ति का उपाय क्या है ?

यह जो साक्षी का सोया हुआ होना है, इससे मन पैदा हो जाता है। यानी वह सोया हुआ होना ही मन है। यह मन एक प्रकार का 'छाया अस्तित्व' है, शैडो एक्झिस्टेंस है। इसकी कोई वास्तविक स्थिति नहीं है। इसलिए मन हमेशा मिटने से डरा रहता है। घबड़ाहट लगी रहती है--कब मिट जाए! उस मिटने के भय से, वह मिटने की जो संभावना है, आशंका है, उससे भय पैदा होता है, फियर पैदा होता है।

पूछा है कि भय क्या है ?

जिस-जिस चीज को आप अपना होना समझे हुए हैं, वे सभी चीज मरणधर्मा हैं, यह भय है। जिस-जिस चीज को आप अपना होना समझे हुए हैं कि यह मैं हूँ, वे सभी मरणधर्मा हैं। भीतर प्रत्येक की मृत्यु का स्पष्ट बोध है।

आप संपत्ति को समझे हुए हैं कि यह संपत्ति मेरी है। लेकिन आप बहुत गहरे में, हरेक व्यक्ति जानता है, संपत्ति मेरी नहीं है। क्योंकि आप नहीं थे तब भी संपत्ति थी, आप नहीं होंगे तब भी संपत्ति होगी। आप उसके मालिक हो नहीं सकते, लेकिन मालिक बने हैं।

तो मालकियत झूठी है, इसका बहुत भीतर गहरे में बोध प्रत्येक को है। तो मालकियत खोने का डर पीछे लगा हुआ है, क्योंकि वह झूठी है। इसलिए हर आदमी अपनी संपत्ति की सुरक्षा के लिए डरा हुआ है कि संपत्ति कहीं छूट न जाए। जिस यश को आप समझे हुए हैं मेरा है, आप बहुत गहरे में, प्रत्येक व्यक्ति जानता है, यश मेरा नहीं, क्षण में छूट सकता है। किसी का दिया हुआ है, बिल्कुल उधार है, अभी छीना जा सकता है। तो यश के बचाव के लिए आप भयभीत हैं। जिस देह को आप समझते हैं कि यह मैं हूँ, रोज चारों तरफ देखते हैं कि देह मिट जाती है। आप भी किसी तल पर जानते हैं कि देह मिट जाएगी। इसलिए देह के मिटने का भय लगा हुआ है। आप जिन-जिन चीजों के जोड़ हैं, उन सभी चीजों के विनष्ट होने का, उन सभी चीजों के पराए होने का, उन सभी चीजों के वास्तविक संपत्ति न होने का आपके भीतर थोड़ा न बहुत बोध है। वही बोध आपको भयभीत किए हुए है। उस बोध के कारण ही आप भयभीत हैं। उसी से फियर पैदा हो रहा है।

अगर एक इंडियट हो, जड़बुद्धि हो, उसको कोई भय नहीं है। वह आग में हाथ डाल देगा। घर में आग लगी हो, वह बैठा रहेगा। तो कोई वह जड़बुद्धि कोई परमज्ञान को उपलब्ध नहीं हो गया है। असल में बोध न होने से, जो-जो चीजें मरणधर्मा हैं, उनका उसे पता ही नहीं चल रहा है। इसलिए उसे कोई भय नहीं है।

मनुष्य सबसे भयभीत प्राणी है। और भयभीत होने का कारण है, उसे बोध है। तो जो-जो चीज गलत है, उसकी सरकती हुई अनुभूति उसे होती रहती है कि यह गलत है, यह ठीक नहीं है, यह छूट जाएगी।

एक मुसलमान बादशाह हुआ। सुबह-सुबह वह अपने दरबार में जाकर बैठा था कि एक फकीर भीतर आया। पहरेदारों ने रोकने की कोशिश की, तो उसने कहा कि कौन मुझे रोक सकता है? कोई इसका मालिक नहीं है जो मुझे रोक सके! वह इतना दबंग था फकीर, ऐसा प्रभावशाली था कि पहरेदार घबड़ा कर खड़े हो गए। ऐसा कोई आदमी नहीं आया था। उसने कहा : हट जाओ यहां रास्ते से! कौन मुझे रोक सकता है! किसका है यह? यह किसी का भी नहीं है।

पहरेदारों ने खबर दी कि ऐसा फकीर आया है, बड़ा प्रभावशाली है और वह कहता है, किसी का मकान नहीं, कोई मुझे भीतर जाने से रोक नहीं सकता!

राजा ने कहा : उसे ले आओ।

फकीर लाया गया। उस फकीर ने कहा कि मैं इस सराय में कुछ दिन ठहरना चाहता हूं। कौन मुझे रोक सकता है!

उस राजा ने कहा कि बिल्कुल ही अशिष्ट बात बोल रहे हो। एक तो पहरेदारों के साथ तुमने दुर्व्यवहार किया, दूसरा अब तुम मेरे निवास को, मेरे महल को कहते हो सराय! धर्मशाला! अपने शब्द वापस ले लो!

वह फकीर बोला : मैं अपने शब्द वापस ले लूं, जो कि बिल्कुल सच हैं? नहीं, मैं तुमसे कहूंगा, अपने शब्द वापस ले लो। क्योंकि मैं इसके पहले आया तो तुम यहां नहीं थे, कोई और था जो इसका मालिक बना था। इस सिंहासन पर मुझे पहले भी यही झंझट हो चुकी है।

उसने कहा : वे कोई नहीं थे, मेरे पिता थे।

और उसने कहा कि उनके पहले भी मैं आया हूं। और तब भी यह झंझट हो चुकी है। तब वे नहीं थे, कोई और था।

राजा ने कहा : वे उनके पिता थे।

और फकीर ने कहा कि ऐसा मैं बहुत बार आया हूं। जब भी यहां पाया, तो दूसरे आदमी को पाया। और मैं तुमको पक्का कहता हूं, जब दुबारा आऊंगा, तो तुम नहीं रहोगे। तो मैं इसको सराय कहने लगा, क्योंकि यहां तो आदमी बदलते रहते हैं। यहां मालिकियत किसी की नहीं। तुम अपना शब्द वापस ले लो कि यह निवास है। यह सराय है, यहां तुम आए हो, ठहरे हो, चले जाओगे।

उस राजा ने सुना, उसने दरबारियों से कहा : मैं अपने शब्द ही वापस नहीं लेता, अपना जीवन भी वापस लेता हूं। वह उठा और फकीर के पीछे हो गया। उसने कहा कि मुझे दिखाई पड़ गया कि यह सराय है। मैं इसमें हमेशा नहीं था।

लेकिन सराय को अगर हम निवास समझें, तो फियर होगा। चाहे हम ऊपर से कितना ही समझे रहें कि यह हमारा निवास है, लेकिन अगर आप धर्मशाला में ठहरे हुए हैं और आप यह समझे रहें कितना ही कि मेरा मकान है, फिर भी भीतर किसी तल पर आप झुठला नहीं सकते, आप जानते हैं कि यह मकान नहीं है, मैं ठहरा हुआ हूं। तो घबड़ाहट लगी रहेगी—कब निकल जाऊं, कब अलग कर दिया जाऊं! कब बेघर हो जाऊंगा, यह डर बना ही रहेगा, क्योंकि जहां आप ठहरे हैं, वह घर है ही नहीं। फियर पैदा होता है, भय पैदा होता है। भय इसलिए पैदा होता है कि जहां घर नहीं है, वहां घर समझे हुए हैं।

यह भय बुरा नहीं है। मेरी दृष्टि से, जिसमें यह भय नहीं है, वही बात बुरी है। यह भय बुरा नहीं है, क्योंकि जड़बुद्धि में यह भय नहीं होगा। इसलिए जितनी सतेज बुद्धि होगी, उतनी भयभीत होगी। क्योंकि सब तरफ उसे लगेगा

कि जहां-जहां मैं पैर रखे हुए हूं, जमीन समझे हुए हूं, वहां जमीन है ही नहीं। उसे दिखाई पड़ेगा न! अंधा आदमी नहीं है, जिसके पास आंख है, बोध है, उसे हर चीज भयभीत करती हुई मालूम पड़ेगी। उसका जीवन धीरे-धीरे बिल्कुल ही भय से भर जाएगा, वह कंपने लगेगा पत्ते की तरह, सब भयभीत हो जाएगा भीतर।

लेकिन इसी भय से अभय पैदा होगा। इसी बोध से, जब कि हरेक चीज उसे आश्वासन देने में असमर्थ हो जाएगी, जब कोई भी चीज उसे ऐसी न रह जाएगी जो अभय दे सके। जिसको दे रही है अभय, वह नासमझ है। एक आदमी दस लाख रुपये पकड़े बैठा है और सोचता है कि मैं फियरलेस हो गया, अब मुझे कोई भय नहीं है; वह पागल है। लेकिन जिसके पास बोध होगा, उसे दस लाख क्या, दस करोड़ भी, दस अरब भी अभय नहीं दे सकते। उसे दिखाई पड़ेगा यह मामला कि कितना ही मेरे पास हो, इससे भय मिटता नहीं। बल्कि जितना यह होता जाता है, यह और इसका होना भी एक नये भय का कारण हो जाता है—उसकी सुरक्षा, उसकी व्यवस्था। फिर भी वह सुरक्षित रहने वाला नहीं है।

भय का बोध बुद्धि का लक्षण है। इसलिए भय कोई बुरी बात नहीं है। असल में बुरी बात इस जीवन में और इस जगत में कुछ भी नहीं है। और जिन-जिन को हम बुरा मानते हैं, उनसे ही उसके लिए मार्ग मिलता है जिसको हम शुभ कहते हैं। अगर भय का बोध आपका पूरा हो जाए, अगर एंग्विश टोटल हो जाए, अगर घबड़ाहट और संताप पूरा हो जाए, तो आपके जीवन में क्रांति हो जाएगी। आप उस अग्नि से दूसरे आदमी होकर पैदा हो जाएंगे, आपका नया जन्म हो जाएगा।

क्योंकि जब आपको सब तरफ भय दिखाई पड़ने लगेगा स्पष्ट और कोई घर घर नहीं मालूम होगा, कोई अपना अपना नहीं मालूम होगा, कोई संपत्ति संपत्ति नहीं मालूम होगी, पैर के नीचे कोई भूमि नहीं मालूम होगी, जब ऐसे आप चारों तरफ भय से भर जाएंगे, उसी भय में बाहर का विश्वास चला जाता है और भीतर आंख मुड़ती है। उसी भय में बाहर की आस्था खो जाती है और भीतर की निष्ठा पैदा होती है। तब आप वहां खोजते हैं कि शायद यहां घर मिल जाए।

जब तक बाहर घर को समझते हैं कि मिल सकता है, तब तक आप भयभीत रहेंगे। क्योंकि घर कितना ही मिल जाए, कोई बाहर घर हो नहीं सकता, क्योंकि है नहीं। वस्तुस्थिति ऐसी है कि बाहर कोई घर नहीं है। कितना ही खोजें, मिल सकता नहीं है। भय भीतर बना ही रहेगा। हां, लेकिन अगर बाहर के सारे घर व्यर्थ मालूम हों और भय पूरा हो जाए, तो भीतर प्रवेश होगा। और वहां घर है। उसके मिलते ही अभय पैदा हो जाता है। भीतर जो भूमि है, उस पर पैर पड़ते ही अभय पैदा हो जाता है।

उसके पहले, जिनको आप समझते हैं कि जिनमें कोई फियर नहीं है, समझते हैं कि बड़े बहादुर हैं, बड़े हिम्मतवर हैं, वे भी सब भयभीत हैं। उनके हाथ में तलवारें हैं। और तलवारें भय का लक्षण हैं।

संपत्ति को इकट्ठा कर रहे हैं, संपत्ति के बल पर कहेंगे कि मुझे कोई भय नहीं है। लेकिन संपत्ति को इकट्ठा करना भय का लक्षण है।

क्राइस्ट ने अपने शिष्यों को एक दिन कहा : कल की जो चिंता करता है, वह भयभीत है। क्योंकि वह डरा हुआ है कि कल क्या होगा? कल का डर है। क्राइस्ट ने कहा कि इन फूलों की तरह हो जाओ; जो खिलते हैं, मुरझा जाते हैं; लेकिन जिन्हें कोई चिंता नहीं। लेकिन फूलों को चिंता न होने को मैं कोई बहुत अच्छी बात नहीं मानता। बोध की कमी है वहां। फूल की भांति नहीं

होना। यानी बोध हट जाए आपके भीतर से, तो आप भी निश्चिंत हो जाएंगे। लेकिन उस तरह की निश्चिंतता अभय नहीं लाएगी। उस तरह की निश्चिंतता के पीछे भय बना ही रहेगा। इसलिए बड़े से बड़े लोग जिन्होंने कि अपनी बड़ी निश्चिंतता कर ली, बड़ी सिक्योरिटी कर ली, वे भी भीतर भयभीत बने रहते हैं।

चंगीज जब हिंदुस्तान को लूट-खसोट कर वापस लौट रहा था... हजारों आदमी काट दिए थे। जिस देश में गया, वहां हजारों लोगों को काट दिया। जिस राजधानी में गया, पहले जाकर दस हजार बच्चों के सिर कटवा देता था और अपने सैनिकों से कहता था कि उनको भालों पर लगा कर एक जुलूस निकाल दो पूरे नगर में, ताकि लोग देख लें कि चंगीज आ गया और समझ जाएं कि कौन आ गया है! रात को जहां से फौजें निकलती थीं, बगल के गांव में आग लगा देता था, ताकि रोशनी हो जाए, फौजों का रास्ता साफ हो जाए। लेकिन अपनी मौत से ऐसा भयभीत था कि रात भर सो नहीं सकता था, बार-बार तलवार उठा लेता था। जरा ही खटका हो कि तलवार पर हाथ रख लेता था। रात सो नहीं सकता था, दिन में सोता था। कभी नहीं सोया रात में। दिन में सोता था, जब चारों तरफ नंगी तलवार लिए फौजी खड़े रहते थे, तब वह सोता था। रात के अंधकार में, मान लो फौजियों को झपकी आ जाए, मान लो अंधेरे में कोई घुस आए, इसलिए रात को नहीं सो सकता था। अंधेरे से डरता था। और ऐसे ही उसकी मौत हुई।

जब हिंदुस्तान से लौट रहा था, एक रात को उसे ऐसा लगा, सपने में लगा, और जो आदमी दिन भर हत्या करेगा, रात मारे जाने का सपना देखना उसे बहुत कठिन नहीं है, बहुत स्वाभाविक है। उसने देखा कि दुष्ट घुस आए हैं, दुश्मन घुस आए हैं, और उसे मारने की तलाश में हैं। वह एकदम नींद में उठा और भागा। बाहर जो उसका टेंट था, उसकी रस्सी से उसका पैर फंस गया, गिर पड़ा और घबड़ाहट में मर गया। ऐसा आदमी जिसने लाखों लोग मार दिए निर्ममता से, वह ऐसा भयभीत था।

ये सिकंदर और नेपोलियन और हिटलर कोई बहादुर आदमी मत समझना, ये सब भयभीत लोग हैं। असल में ये दूसरे को मार कर अपने को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हम इतने लोगों को मार सकते हैं तो हमको कौन मार सकेगा! कुल और कोई बात नहीं। इसलिए जो जितना भयभीत है, उतने लोगों को मारने की कोशिश करेगा, दबाने की कोशिश करेगा। वह सेल्फ-कांफिडेंस पैदा करना चाह रहा है, आत्मविश्वास, कि जब मैं इतने लोगों को मार सकता हूं तो मुझे कौन मार सकेगा! मरने का भय है, बहुत लोगों को मार कर, लाशों को बिछा कर, वह यह विश्वास ले आता है, सिक्योरिटी पैदा कर लेता है, सुरक्षा, कि मुझे कोई नहीं मार सकता अब। ये सब भयभीत लोग हैं।

यह इतिहास जिन लोगों के खून-खराबे से भरा हुआ है, ये दुनिया के सबसे ज्यादा भयभीत लोग थे। लेकिन बाहर की सुरक्षा से भय जा नहीं सकता। बाहर की कोई व्यवस्था भय को नहीं मिटा सकती। और भय से हिंसा पैदा होती है। भयभीत आदमी हिंसा करेगा, करवाएगा। क्योंकि उससे उसे विश्वास आता है कि मेरे भीतर भय नहीं है, ऐसा विश्वास अपने को दिलाता है। लेकिन भय भीतर बना रहता है।

आदमी राज्य जीत ले, बड़े पदों पर पहुंच जाए... इसीलिए चेष्टा है। राजनैतिज्ञ बहुत भयभीत आदमी होता है। बड़े से बड़े पद पर पहुंचने की उसकी जो कोशिश है, वह इसी ख्याल में है कि वहां पहुंच कर मैं निर्भय हो जाऊंगा, फिर मुझे कोई भय नहीं रहेगा। निश्चित ही। एक गांव का चपरासी है और एक राष्ट्रपति है। तो सोचता

है चपरासी, अगर मैं राष्ट्रपति हो जाऊं, फिर मुझे कोई भय नहीं। राष्ट्रपति होने की जो कोशिश है, या प्रीमियर होने की जो कोशिश है, या मंत्री होने की जो कोशिश है, सत्ता को पाने की जो कोशिश है, वह अपने भीतर भय को झुठलाने की कोशिश है। लेकिन कितनी ही व्यवस्था कर लो, भय तो कहीं जा नहीं सकता। बाहर की कोई व्यवस्था भय को नष्ट नहीं करती, बल्कि एक नये भय को पैदा कर देती है--कि जो व्यवस्था मिल जाती है, अब कहीं यह छूट न जाए। तो बड़े की चेष्टा शुरू होती है और नीचे जो मिला है उसे पकड़ रखने की, बचाए रखने की कोशिश शुरू होती है। और ऐसे हम भय से घिरते जाते हैं।

लेकिन यदि भीतर दृष्टि घूम जाए, तो अभय का स्थान मिल जाता है। क्योंकि वहां दिखाई पड़ता है कि जो है उसकी कोई मृत्यु नहीं है। वहां दिखाई पड़ता है कि जो है उसका कोई अंत नहीं है। वहां दिखाई पड़ता है कि जो है उसे छीना नहीं जा सकता। वहां जो संपदा मिलती है वह नष्ट नहीं हो सकती है। यह जहां स्थिति स्पष्ट हो जाए, वहीं अभय शुरू हो जाता है।

पूछा है कि भय-मुक्ति का उपाय क्या ?

उपाय मत पूछें। क्योंकि उपाय सारे लोग कर रहे हैं। भय-मुक्ति के ही उपाय कर रहे हैं। धन को इकट्ठा करने वाला भी, पद को इकट्ठा करने वाला भी, तलवार इकट्ठी करने वाला भी, शरीर को मजबूत करने वाला भी, ईश्वर का भजन-कीर्तन करने वाला भी, सब भय-मुक्ति के उपाय कर रहे हैं। भय-मुक्ति का उपाय मत पूछें, वह तो सारी दुनिया कर रही है।

भय-मुक्ति का उपाय नहीं; भय के प्रति जागरण, भय के प्रति होश--कि भय है क्यों ? क्या है उसकी बुनियाद में कारण ? और अगर कारण दिखाई पड़ जाए कि भय का कारण यह है कि जो अभय की भूमि है उसमें हमारा प्रवेश नहीं है, और जो भय की भूमि है वहीं हम कोशिश कर रहे हैं कि अभय उपलब्ध हो जाए। अगर यह दिख जाए, तो परिवर्तन शुरू हो जाएगा। अगर भय का स्पष्ट कारण दिख जाए, उसकी कॉजेलिटी दिखाई पड़ जाए, उसकी बुनियाद दिखाई पड़ जाए, तो आप अभय में प्रवेश करना शुरू कर जाएंगे।

भय को देखें और समझें कि वह क्यों है ? बिना उसे समझे भय-मुक्ति के उपाय की कोशिश मत करें। और मेरा कहना है, जो समझ लेता है, उसे उपाय करने की कोई जरूरत नहीं रह जाती। क्योंकि जिसने समझ लिया कि भय क्यों है, उसका भय गया। भय को खोजते ही से भय चला जाएगा। हम भय को तो खोजते नहीं, उपाय खोजते हैं उससे बचने का। और तब सब उपाय व्यर्थ हो जाते हैं।

मुझे जैसा दिखाई पड़ता है, वह यही कि जीवन में किसी चीज से बचने की कोशिश न करें, उसे जानने की कोशिश करें। भय कुछ बुरा नहीं है, उसे जानने की कोशिश करें, उसके जानने से ही क्रांति होती है।

-साक्षी की साधना-10

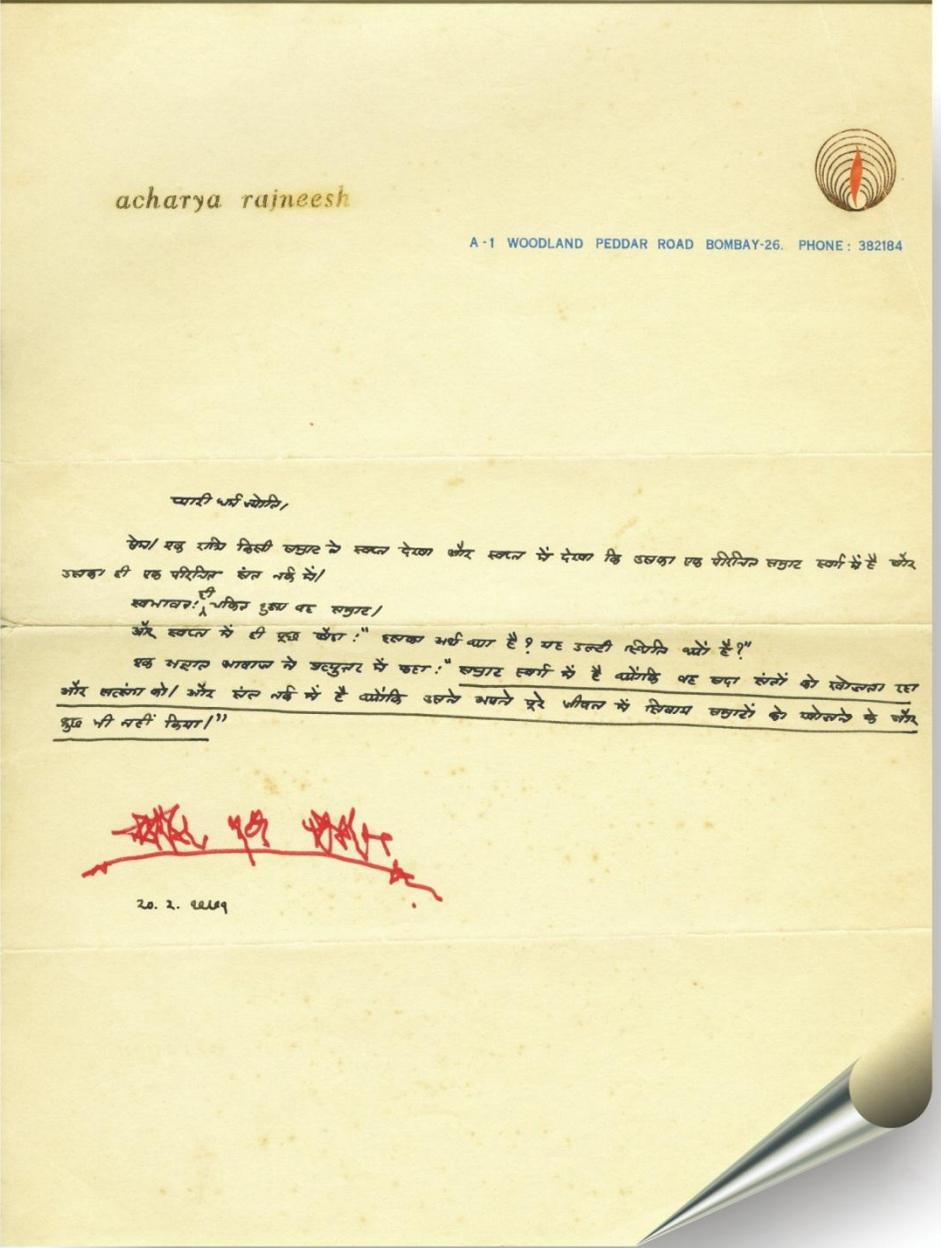


साक्षी की साधना-10
उपरोक्त प्रवचन को सुनने के
लिए इस बटन को स्पर्श करें



साक्षी की साधना-10

ओशो द्वारा हस्तलिखित पत्र



acharya rajneesh



A-1 WOODLAND PEDDAR ROAD BOMBAY-26. PHONE: 382184

प्यारी श्री ज्योति,

येना/ यह रोज़ दिल्ली सचर के सचन देखा और सचन में देखा कि उचका एक परिचित सचर सचरी में है और उचका ही एक परिचित संत नई में।

सचभाव में ^{ही} अचिन कुछ वर सचर।

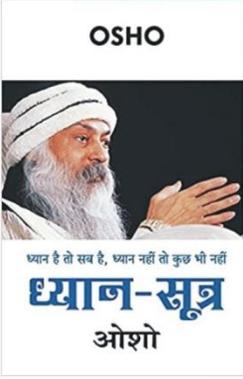
और सचन में ही सच सचर : "सचर अर्थ क्या है? यह उन्ही सचरी में है?"

यह महान भावाज ने उचुनर में कहा : "सचर सचरी में है क्योंकि वह सच संतों को खोजता रहा और सचन को। और संत नई में है क्योंकि उचने अपने दूरे जीवन में सिखाया सचरों को खोजने के सचर कुछ भी नहीं किया।"

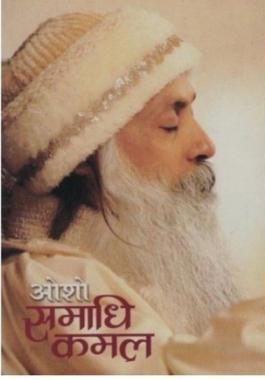
(Handwritten signature in red ink)

20. 2. 1969

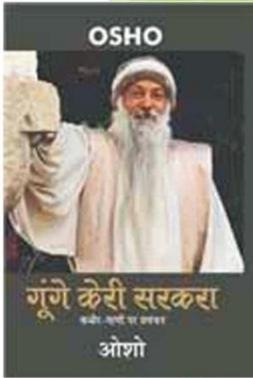
प्रेम के परिष्कार हेतु श्रवणीय ओशो प्रवचन



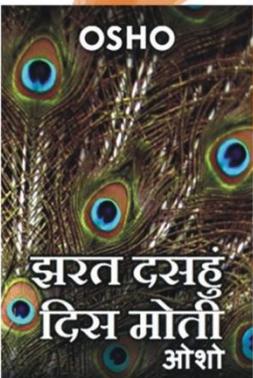
1. भाव शुद्धि: ध्यान सुत्र-5



2. समाधि कमल-5



3. गूंगे केरी सरकरा-1



4. झरत दसहुं दिस मोती-19

ताजगी से भरने वाला गहरी निद्रा का प्रयोग

-ओशो

देव वाणी - ध्यान विधि

बहुत कम लोग रात्रि में ठीक तरह से सो पाते हैं। जब आप ठीक से नहीं सो पाते तो दिन में थकान महसूस करते हैं। यदि ऐसा है तो आपको अपनी नींद के साथ कुछ करना होगा। इसे गहरी करना होगा। बात इतनी समय की नहीं है, आप आठ घंटे सो सकते हैं परंतु यदि नींद गहरी नहीं है तो आप नींद के भूखे होंगे, इसके लिये तरसेंगे, प्रश्न गहराई का है।

हर रात सोने से पहले एक छोटी-सी तकनीक का प्रयोग करें और आप बेहद बेहतर महसूस करेंगे। बिजली बुझा कर अपने बिस्तर में सोने के लिये तैयार होकर बैठ जायें। पंद्रह मिनट के लिये अपनी आंखें बंद कर लें और कोई भी अनर्गल, उबानेवाली ध्वनि निकालना शुरू करें, जैसे कि ला, ला, ला और प्रतीक्षा करें कि मन और नयी ध्वनियां पैदा करे। स्मरण रखने योग्य एक ही बात है कि वह ध्वनि या शब्द किसी ऐसी भाषा के न हों जिसे आप जानते हैं। यदि आप अंग्रेजी, जर्मन या इटालियन भाषा जानते हैं तो वे अंग्रेजी, जर्मन या इटालियन भाषा के नहीं होने चाहिये। किसी भी उस भाषा की आपको अनुमति है जिसे आप नहीं जानते; जैसे: तिब्बती, चीनी, जापानी। लेकिन यदि आप जापानी जानते हैं तो उसकी अनुमति नहीं है, हां तब इटालियन बढिया रहेगी।

कोई भी भाषा जो आप नहीं जानते, वह बोल सकते हैं। पहले दिन आप कुछ क्षणों के लिये थोड़ा मुश्किल महसूस करेंगे क्योंकि उस भाषा को कैसे बोलें जो आप नहीं जानते?इसे आप बोल सकते हैं... और एक बार शुरू हो जाये, कोई भी ध्वनि, कोई भी अनर्गल शब्द; तो चेतन मन को हटाकर अवचेतन को बोलने दें... जब अवचेतन मन बोलता है तो उसकी कोई भाषा नहीं होती।

यह बहुत ही प्राचीन विधि है। यह ओल्ड टैस्टामेंट से आती है। उन दिनों इसे ग्लासोलालिया कहा जाता था। अभी भी अमेरिका के कुछ चर्चों में इसका इस्तेमाल होता है। वे इसे 'टॉकिंग इन टंग अर्थात् जीभ में बोलना' कहते हैं। और यह एक अभूतपूर्व विधि है- एक ऐसी विधि जो अवचेतन में बहुत गहरे तक जाती है। आप ला, ला, ला से प्रारंभ करते हैं और फिर जो भी ध्वनि उभरती है आप उसे आने देते हैं। केवल पहले दिन आप थोड़ा मुश्किल महसूस करते हैं और यदि एक बार यह ध्वनि उठने लगी तो आपके हाथ में बड़ा रहस्य आ जाता है। पंद्रह मिनट के लिये आप उन शब्दों को बोल सकते हैं जो अवचेतन से उठ रहे हैं और उनका एक भाषा की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं। यह आपके चेतन मन को बहुत गहराई तक विश्रांत कर देगा।

पंद्रह मिनट पश्चात आप बस लेट जायें और सो जायें। आपकी नींद गहरी हो जायेगी। कुछ ही सप्ताह में आप अपनी नींद में बहुत गहराई का अनुभव करेंगे, और सुबह बिलकुल तरोताजा महसूस करेंगे।

- (अनुवादित)



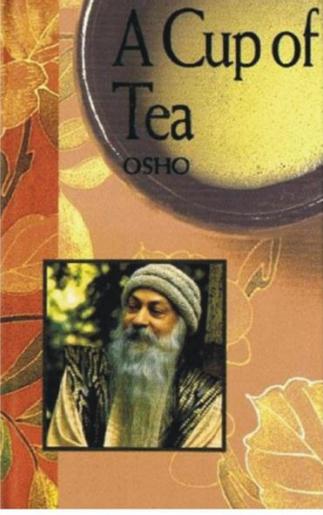
देव वाणी ध्यान संबंधित निर्देश-



देव वाणी ध्यान-

एक कप चाय

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती



प्रश्न- परमगुरु ओशो की एक अंग्रेजी किताब का शीर्षक है-‘ए कप ऑफ टी’। इसका तात्पर्य समझाने की अनुकंपा करें ?

यह अद्भुत पुस्तक ओशो द्वारा हस्तलिखित पत्रों का संकलन है। इनमें साधकों को दिए गए दिशा-निर्देश हैं। पत्रों में ओशो का ऐसा प्रेम झलकता है कि पढ़ने वाला भाव-विभोर हो जाता है। जरूरी नहीं कि आप आरंभ से ही शुरु करें। किसी भी पृष्ठ को खोलकर पढ़ लें और आपको ऐसा प्रतीत होगा कि आपके जीवन की आज की ही किसी घटना या समस्या के संबंध में परमगुरु की अंतर्दृष्टि आपको मिल गई। मूर्च्छा दूटी, जागृति आई।

चूंकि चाय हमें जगाती है, और विशेषकर जापान के झेन मठों में तो ‘टी-सेरेमनी’, चाय-समारोह को एक ध्यान विधि के रूप में ही किया जाता है। अतः यह प्यारा शीर्षक स्वयं ओशो द्वारा चुना गया है। थोड़े दिन पहले मैं एक कहानी पढ़ रहा था, प्रीतिकर लगी। सुनो। उसे सुनकर संकेत मिल जाएगा।

दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर कक्षा में आये और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाने वाले हैं। उन्होंने अपने साथ लाई एक काँच की बड़ी बरनी (जार) को टेबल पर रखा और उसमें टेबल टेनिस की गेंदें डालने लगे और तब तक डालते रहे जब तक कि उसमें एक भी गेंद समाने की जगह नहीं बची। उन्होंने छात्रों से पूछा-क्या बरनी पूरी भर गई ?

हाँ-आवाज आई।

प्रोफेसर साहब ने छोटे-छोटे कंकर उसमें भरने शुरु किये, धीरे-धीरे बरनी को हिलाया तो काफी सारे कंकर उसमें जहाँ जगह खाली थी, समा गये। फिर प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्या अब बरनी भर गई है ?

छात्रों ने एक बार फिर कहा-हाँ।

तब प्रोफेसर साहब ने रेत की थैली से हौले-हौले उस बरनी में रेत डालना शुरु किया, वह रेत भी उस जार में जहाँ संभव था वहाँ बैठ गई, अब छात्र अपनी नादानी पर हँसे। प्रोफेसर साहब ने पुनः पूछा- क्यों अब तो यह बरनी पूरी भर गई ना ?

हाँ सर, अब तो पूरी भर गई है-सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया।

सर ने टेबल के नीचे से चाय का एक कप निकालकर उसमें भरी चाय जार में डाली, चाय भी रेत के बीच मौजूद थोड़ी-सी जगह में सोख ली गई।

प्रोफेसर साहब ने गंभीर आवाज में समझाना शुरु किया- इस काँच की बरनी को तुम लोग अपना जीवन समझो। टेबल टेनिस की गेंदें सबसे महत्वपूर्ण भाग अर्थात् आजीविका, परिवार, बच्चे, मित्र, स्वास्थ्य और शौक हैं। छोटे कंकर मतलब तुम्हारी कार, मकान, फर्नीचर, मनोरंजन आदि हैं, और रेत का मतलब और

भी छोटी-छोटी बेकार सी बातें, निंदा, मनमुटाव, बहस, झगड़े वगैरह हैं। यदि तुमने काँच की बरनी में सबसे पहले रेत भरी होती तो टेबल टेनिस की गेंदों और कंकरो के लिये जगह ही नहीं बचती, या कंकर भर दिये होते तो गेंदें नहीं भर पाते। रेत जरूर आ सकती थी।

ठीक यही बात जीवन पर लागू होती है। यदि तुम छोटी-छोटी बातों के पीछे पड़े रहोगे और अपनी ऊर्जा उनमें नष्ट करोगे तो तुम्हारे पास मुख्य बातों के लिये पर्याप्त समय नहीं रहेगा। आत्म-सुख के लिये क्या जरूरी है- यह तुम्हें तय करना है। ध्यान साधना करो, भक्तिभाव में डूबो, अपने बच्चों के साथ खेलो, बगीचे में पानी डालो, सुबह पत्नी के साथ घूमने निकल जाओ, घर के बेकार सामान को बाहर निकाल फेंको, मेडिकल चेक-अप करवाओ। टेबल टेनिस गेंदों की फिक्क पहले करो, वह सर्वधिक महत्वपूर्ण है। तय करो कि क्या अनिवार्य है? फिर बाकी कम महत्व की वस्तुओं का, यानि कंकर का। और वक्त मिले तो रेत का भी ख्याल करो।

छात्र बड़े ध्यान से सुन रहे थे। अचानक एक ने पूछा, सर लेकिन आपने यह नहीं बताया कि 'चाय का कप' क्या है ?

प्रोफेसर मुस्कराये, बोले- मैं सोच ही रहा था कि अभी तक यह सवाल किसी ने क्यों नहीं किया? इसका उत्तर यह है कि चाय जागरण का प्रतीक है। होश की साधना के लिए अलग से वक्त नहीं लगता। उतना स्थान सदा खाली रहता ही है। जो कुछ भी करो, ध्यानपूर्वक करो। तुम्हारा संपूर्ण जीवन सजगता से ओत-प्रोत होता रहे। तब तुमसे कभी कुछ गलत न होगा, जिसके लिए पछताना पड़े।

चाय का एक अर्थ और है- जीवन हमें कितना ही परिपूर्ण और संतुष्ट लगे, लेकिन अपने खास मित्र के साथ एक कप चाय पीने की जगह हमेशा खाली होनी चाहिये। जीवन में जब सब कुछ एक साथ और जल्दी-जल्दी करने की इच्छा होती है, सब कुछ तेजी से पा लेने की इच्छा होती है, और हमें लगने लगता है कि दिन के चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं तो ऐसे तनाव के समय यह बोध कथा हमें याद रखनी चाहिए।

सिन्डिसयर बनो, सीरियस नहीं। गैर-गंभीर रहना सीखो। विश्राम भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना श्रम। परिवारजन या दोस्त के संग चाय पीने का समय जिसके पास नहीं है वह व्यक्ति चाहे आर्थिक रूप से सम्पन्न हो, मगर हार्दिक रूप से विपन्न है, भावनात्मक तल पर अति-दरिद्र है।



pdf link for book - A Cup of Tea by Osho =



-प्रेम के फूल
(पत्र संकलन)



जीवन का लक्ष्य

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न- जीवन में आपका लक्ष्य क्या है?

एक गीत के माध्यम से अपने दिल की बात रखता हूँ-



यह मेरा सौभाग्य कि अब तक, मैं जीवन में लक्ष्यहीन हूँ।
मेरा भूत भविष्य न कोई, वर्तमान में चिर नवीन हूँ।
कोई निश्चित दिशा नहीं है, मेरी चंचल गति की बंधन।
कहीं पहुंचने की न त्वरा में, आकुल व्याकुल है मेरा मन।
खड़ा विश्व के चैराहे पर, अपने में ही सहज लीन हूँ।
मुक्त दृष्टि निरुपाधि निरंजन, मैं विमुग्ध भी उदासीन हूँ।
अब एक पंक्षी की उपमा से स्वयं की बात-
ये कितना सौभाग्य है मेरा, कि यह जीवन लक्ष्यहीन है,

चलने वाले ढेर यहां पर, मेरा जीवन पथ-विहीन है।।
कोई निश्चित दिशा नहीं है, मेरी चंचल गति की बंधन,
यह सारा आकाश है मेरा, उड़ें जहां चाहे मेरा मन।
रहजन से है नहीं कोई भय, मेरे पास नहीं कोई धन,
सता नहीं सकते हैं मुझको, करने वाले मार्ग-प्रदर्शन।
क्योंकि मंजिल नहीं है कोई, अपने आप में पथिक लीन है,
ये कितना सौभाग्य है मेरा, कि यह जीवन लक्ष्यहीन है।।

कितने वृक्षों पर मैं सोया, उनकी कोई याद नहीं अब,
मित्र मिले-बिछुड़े कब रोया, अलविदा कहकर भूल गया सब।
नहीं तनिक भी फिक्र हृदय में, आगे क्या होगा कैसे कब,
एक भरोसा है खुद पर बस, जब जो होगा देखूंगा तब।
बिना याद और बिना आस के, सब कुछ कैसा चिर-नवीन है,
ये कितना सौभाग्य है मेरा, कि यह जीवन लक्ष्यहीन है।।

जब तन में उल्हास भरा हो, पर फैलाकर तिर जाता हूँ,
शाम थकित हो किसी नीड़ में सिकुड़-सिमट के सो जाता हूँ।
जीवन तो साधारण है पर, श्वांस-श्वांस में सुख पाता हूँ,
तभी तो मैं फिर-फिर प्रभात में, इतने मधुर गीत गाता हूँ।
आनंद का बस एक राज है- गति मेरी गंतव्यहीन है।
ये कितना सौभाग्य है मेरा, कि यह जीवन लक्ष्यहीन है।।

•प्रश्न- क्या आप वही काम कर रहे हैं जिसे करने का आपने कभी सपना देखा था?

- जी हाँ! 100 प्रतिशत।
- चिकित्सक की भूमिका 21 साल बाद छोड़कर, मैंने ध्यान प्रशिक्षक की भूमिका अपनाई ताकि सद्गुरु ओशो के संदेश को लोगों तक पहुंचा सकूँ। इस कार्य में संलग्न हुए जब 21 वर्ष हो गए, तब पुनः कार्य-पद्धति मैं नया मोड़ आया। गहन से और गहन संतुष्टि के अहसास में डूबना हो रहा है। मेरी जीवन-संगिनी ने भी पूरी तरह साथ निभाया, यह भी एक दुर्लभ सौभाग्य की घटना है।

•प्रश्न- एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए यदि उन्होंने अभी तक अपने जीवन में कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है?

- अपनी अंतः प्रेरणा, इनट्यूशन पावर, इंटेलिजेंस, भावनात्मक लगाव, और रुचि-रुझान के अनुसार, उपलब्ध अवसरों में से सर्वश्रेष्ठ मार्ग चुनना चाहिए। दूसरों के कहने से नहीं बल्कि स्वयं अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर निर्णय करना चाहिए। तभी जीवन में सच्चा संतोष मिलता है, तृप्ति का एहसास होता है। अनेक विकल्पों में डावांडोल होने की बजाए एक संकल्प के प्रति समर्पित होना बेहतर है। अहं-भाव का क्रिस्टलाइजेशन होता है। जब ऐसा हो जाए तो क्रमशः संकल्प भी विदा होने लगता है, अस्तित्व के प्रति समर्पण ही बचता है। तथाता भाव में डूबना हो जाता है। पहले मैंने कविता में जो भाव व्यक्त किया, अंततः वैसा घटित होता है। कर्ता-भाव का क्रिस्टल, पिघल जाता है, वाष्पीभूत हो जाता है।

•प्रश्न- एक सुखी दांपत्य जीवन व्यापन के लिए, पति-पत्नी का लक्ष्य क्या होना चाहिए?

- पति-पत्नी मोक्ष मार्ग के यात्री बनें तो धरती पर ही स्वर्ग है। हिंदू धर्म में वर्णित चारों पुरुषार्थों में मोक्ष सर्वोत्तम पुरुषार्थ है। यही जीवन का केंद्र होना चाहिए। हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य हमसे ऊपर होना ही चाहिए- कोई तीसरा बिंदु। दो मित्रों के मध्य, प्रेमियों के बीच, उनसे परे कोई तीसरा बिंदु हो, जहां दोनों को पहुंचना हो, तब वे जीवन भर संग-साथ हो सकते हैं। वह ट्रांसडेंटल पॉइंट, अतिक्रमण का बिंदु उनके मध्य जोड़ का कार्य करता है।
- अक्सर दंपती एक-दूसरे पर नजर गड़ा लेते हैं, तब ऊपर का थर्ड पॉइंट गायब हो जाता है। जब प्रेम में थे तब मामला कुछ और था। कहीं बगीचे में बैठे दोनों गुनगुना रहे थे और गीत का मजा ले रहे थे। कभी चांदनी रात में चाँद को देख प्रसन्न हो रहे थे। उस खूबसूरत थर्ड पॉइंट की वजह से प्रेम विकसित होता गया। धीरे-धीरे प्रेम की जगह घर-गृहस्थी की इतनी नकारात्मक, करूप समस्याएं आ गई कि बीच का सकारात्मक, सुंदर, तीसरा बिंदु गायब हो गया। अब दोनों की नजर एक-दूसरे पर है। यही से संघर्ष और कलह की शुरुआत हो जाती है।
- सतान उत्पत्ति के बाद थर्ड पॉइंट बच्ये हो जाते हैं। एक कॉमन फैक्टर बन जाते हैं, जहां दोनों का लगाव है। लेकिन एक समय आएगा बच्ये बड़े हो गए, इंडिपेंडेंट हो गए, बेटी ससुराल गई, बेटा विदेश में जाकर सेटल हो गया। फिर पति-पत्नी अकेले बचते हैं और एक-दूसरे को बर्दाश्त करना उनके लिए अत्यंत मुश्किल हो जाता है। अगर कॉमन इंटरैस्ट वाला थर्ड पॉइंट नहीं है तो फिर जीना बहुत कठिन है। वह थर्ड पॉइंट कुछ-न-कुछ अवश्य होना चाहिए और वह ऐसा होना चाहिए जो हमसे ट्रांसडेंटल हो, जिस पर हम अपना पूरा जीवन केंद्रित कर सकें। अगर हमारा अल्टिमेट टारगेट मोक्ष है तब हम सर्वोत्तम पुरुषार्थ कर रहे हैं और इसमें हम दोनों जीवनभर क्या, जन्म-जन्मांतर के संगी-साथी हो सकते हैं।
- मोक्ष मार्ग के मुसाफिर ही प्रेमपूर्वक एवं आनंदपूर्वक आजीवन रह सकते हैं, मृत्यु पर्यंत और मरने के बाद भी। सांसारिक इच्छाओं में धन, पद, ज्ञान, यश, सम्मान, अहंकार-पोषण के विभिन्न उपाय हैं। लेकिन मोक्ष इन समस्त कामनाओं के ऊपर है। मोक्ष अर्थात आनंद में आत्म निर्भरता। कामनाओं के बंधन मिटें, तभी आत्मानंद जन्मता है।
- आरंभ में हम प्रेम के माध्यम से, दूसरे में आनंद की खोज करते हैं। अंततः यह यात्रा स्वयं के भीतर ही ले जाती है और हम आनंद में थिर हो जाते हैं। ऐसे दो व्यक्ति जो स्वयं की आंतरिक शांति में, आनंदानुभूति में प्रतिष्ठित हैं, इनका संग-साथ कितना अद्भुत होगा! अब वे एक-दूसरे से खुशी पाने के लिए नहीं जीते। कोई परस्पर शिकायत भाव नहीं है। किसी से जबरन कोई अपेक्षा नहीं, दोनों स्वयं में ही तृप्त हैं। ऐसे दंपती का साथ स्वयं ही प्रत्यक्ष स्वर्ग है। जिस जोड़े के जीवन के केंद्र में ऐसी भावदशा होगी, उसका गृहस्थ जीवन गहन प्रेम से, दिव्य प्रेम से, बेशर्त और अकारण प्रेम से आतप्रोत रहता है।

प्रश्नोत्तर वीडियो लिंक

गुरु हरसहाय, पंजाब के **ओंकार साधना शिविर** के दौरान हुए विभिन्न प्रश्नोत्तर के लिंक



जानिए व्यस्त जीवन में मन शांत करने के लिए छोटी-छोटी ध्यान विधियां



वासना को प्रेम में कैसे बदलें ?
वासना को रुपांतरित कैसे करें ?



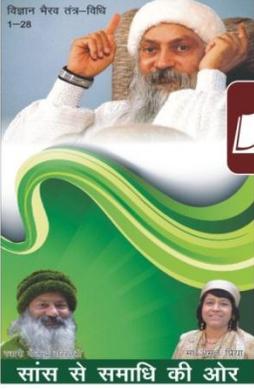
एक ओंकार सतनाम-भव्य सत्संग एवं प्रश्नोत्तर



ओशो महापरिनिर्वाण दिवस (19 जनवरी 1990) पर स्वामी शैलेन्द्र जी का साधकों के लिए संदेश



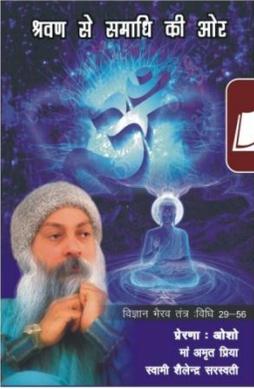
डिजिटल रूप से उपलब्ध साहित्य



सांस से समाधि की ओर

विज्ञान भैरव तंत्र: विधि 1-28
हिंदी संस्करण

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती
मा अमृत प्रिया
मूल्य: 125/-

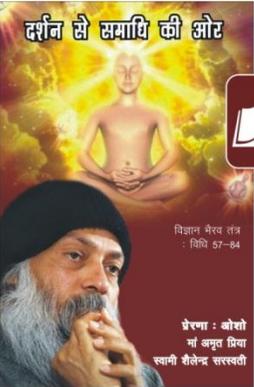


श्रवण से समाधि की ओर

विज्ञान भैरव तंत्र: विधि 29-56

हिंदी संस्करण

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती
मा अमृत प्रिया
मूल्य: 100/-

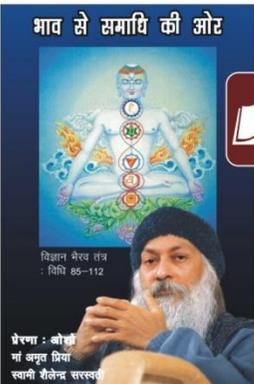


दर्शन से समाधि की ओर

विज्ञान भैरव तंत्र: विधि 57-84

हिंदी संस्करण

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती
मा अमृत प्रिया
मूल्य: 145/-



भाव से समाधि की ओर

विज्ञान भैरव तंत्र: विधि 85-112

हिंदी संस्करण

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती
मा अमृत प्रिया
मूल्य: 125/-

आप इन्हें
[amazon.com](https://www.amazon.com)
पर खरीद भी सकते हैं।

ओशो के श्री चरणोंमें अर्पित माँ अमृत प्रिया जी के भजन



तुम्हारे दर्शन की बेला... (Tumhare Darshan Ki Bela..)



अब हृदय में भक्ति के ये रंग भर जाने दो...



Audio Album - तुम्हारे दर्शन की बेला....



14 फरवरी - वैल्लिटाईन डे विशेष
तुम इश्क हो ओशो... हमारा इश्क हो...



दुर्बुद्धि या दुर्मति क्या है ?

-माँ अमृत प्रिया



हम एक आत्मिक व्याधि से ग्रसित हैं; और वह है, आत्मविस्मरण की बीमारी। हम संसार में आकर, बहिर्मुखी होकर, भूल चुके हैं अपने-आपको, भूल बैठे हैं अपने उद्गम को। व्यर्थ का मलबा हमें याद रह जाता है; और सार्थक तत्व को, अपने मूल को हम भुला बैठते हैं। पृथ्वी का पूरा भूगोल-ज्ञान पता है, बस अपने घर का पता-ठिकाना मालूम नहीं। स्वयं को जानते ही नहीं हैं, भूल ही गए हैं तो याद कैसे करें हम? जब हम गुरु को याद करते हैं, तो उसी से हम स्वयं की याद में लौट आते हैं।

इसलिए, लालन कह रहे हैं कि “गुरु हमारे भीतर ऐसा शुभ भाव भर दो कि हम हमेशा तुम्हारी याद में डूबे रहें; प्रतिपल तुम्हारी याद, इस हृदय में बसी रहे।”

जीवन के तीन तल होते हैं- कर्म, विचार और भाव। शारीरिक कर्म का तल, आत्मा से सर्वाधिक दूर है। मानसिक विचार का तल भी, आत्मा से दूर है। केवल भाव का तल, आत्मा के निकट है। घटना, करना, सोचना, भावना तथा चेतना; इन पांच को क्रमिक छोटे वर्तुलों की भांति देखें। सबसे बड़ी बाहरी परिधि है- जगत में निरंतर घट रही घटनाओं की। संसार में, अधिकतम लोग वहां व्यस्त हैं; उसके अंदर कृत्यों का घेरा है। उससे छोटा भीतरी सर्किल है, विचारों का। उसके भी अंदर है, भावनाओं का वर्तुल। भावना के भीतर विराजमान है- चेतना, आत्मा; और आत्मा का भी केन्द्र है, परम आत्मा यानि परमात्मा ‘द अल्टीमेट कॉन्शियसनेस’!

अगर हमें जीवन के मूलकेन्द्र की ओर गति करनी है, परमात्मा को पाना है; तो पहले, हमें भाव के तल पर आना होगा, उससे भूमिका बनेगी। हृदय की भूमि से आत्मा के आकाश में उड़ान; और फिर परमात्म-दर्शन! तब, सर्वत्र प्रभु की ही अनुभूति होगी। कर्मयोगी और ज्ञानयोगी क्रमशः देह एवं बुद्धि से यात्रा आरंभ करते हैं, जो अति-दुर्गम है। भक्ति सुगम है, सहज है। बस ज़रा-सी छलांग, भावना से चेतना की ओर!

•“हे प्रभु, जिसके ऊपर तुम्हारी दया नहीं है, जिसके ऊपर तुम कृपा नहीं करते हो; उसके भीतर, दुर्बुद्धि पैदा हो जाती है। दुर्बुद्धि या दुर्मति क्या है? आत्मविस्मरण ही तो है! यानि हमारी सारी चेतना, दूसरी ओर भाग रही है। जो हमें अपने स्वभाव में लौटा दे, अपनी ओर प्रतिक्रमण करा दे; वह है, सुमति। हे परमात्मा! मुझमें ऐसा भाव भरो कि तुम मुझे जहां ले चलोगे, मैं तुम्हारे साथ-साथ चलता चलूँ। तुम सभी मनोरथ को पूर्ण करने वाले हो। अब तुम जहां हमें ले जाओगे, हम वहीं जाने के लिए तैयार हैं।” पूर्ण का अर्थ है पूरा। जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो लोग कहते हैं कि वह पूरा हो गया है; पूरा हो गया है यानि मिट गया, शून्य हो गया है। “गुरुवर! तुम हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण कर देने वाले हो यानि शून्य कर देने वाले हो। हमें वासना से मुक्ति देने वाले हो, कामना-शून्य बना देने वाले हो। अब हम समर्पित हैं, चाहे जहां ले जाओ।” मन से ऐसा भाव ही, मुक्ति की ओर अग्रसर करता जाता है। मन; यानि मांग, कामना, मनोरथ, अपेक्षाएं। समर्पण; यानि स्वयं को छोड़ दिया, अब स्वयं पर स्वयं का कोई अंकुश नहीं, वरन गुरु के सम्मुख अर्पित कर दिया। नदी में बहते हुए तिनके की तरह हो गए; और, इसी में रूपांतरण घट जाता है।

•समर्पण तो एक क्रांतिकारी घटना है। गुरु-चरणों में अपनी जीवन-नैया डाल दी, अब गुरु ही हमारा रास्ता तय करेंगे। बिना किसी प्रश्न के, बिना किसी जवाब की मांग के पूर्ण समर्पित, स्वयं को पूर्णतः अर्पित करना आना चाहिए। सिर्फ स्वयं को छोड़ने की कला आनी चाहिए। जब गुरु की इच्छा ही हमारी इच्छा बन जाए, तब होता है ‘समर्पण’।

फरवरी –अंक

वसन्तोत्सव

कृपया pdf खोलिए
एव

रचनाओं का आनन्द उठाईए।

अपने साहित्य-प्रेमी
मित्रों को फारवर्ड
करना न भूलें।




भविष्य की अनिश्चितता, असुरक्षा में शांतिपूर्ण होने का उपाय

—मस्तो बाबा



नमस्कार।

एक मित्र ने प्रश्न पूछा है— कोरोना वायरस ने हमें इस स्थिति पर लाकर खड़ा कर दिया है कि पता नहीं आगे क्या होगा। भविष्य की अनिश्चितता, एक असुरक्षा का भाव घेरने लगा है। इस असुरक्षा में कैसे शांतिपूर्ण जी सकूंगा?

बहुत ही स्वाभाविक प्रश्न पूछा है।

जैसी स्थिति आजकल चल रही है न जाने कल क्या होगा। ना जाने कल का सूरज हमें क्या दिखाएगा। मैं आपका ध्यान ये जो अनिश्चितता, असुरक्षा है ये कहां से उत्पन्न हो रही है इस ओर ले जाना चाहता हूँ। हमारा जीवन भविष्य उन्मुक्त हो गया है। हम या

तो भूतकाल में जीते हैं, उन यादों में या उन विचारों में जी रहे हैं जो हमारे जीवन के सत्य से बहुत दूर हैं। कल क्या होगा, इस कल की चिंता के अंदर, इस कल की असुरक्षा के अंदर हम जो भी पल हमारे हाथ में हैं इससे चूकते जा रहे हैं।

मैं आपसे पूछता हूँ क्या हम हमेशा इस दुनिया में रहने वाले हैं। अगर ये कोरोना वायरस या ये महामारी ना होती तो क्या हमारा जीवन का कोई अंत नहीं होता। अगर ये महामारी नहीं होती तब भी क्या अगले दिन की सुरक्षा हमारी निश्चित है। आज अगर हम इस ओर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि असुरक्षा तो हमारी जीवनशैली है। हम तो हमेशा ही असुरक्षा में जीते हैं। घर से बाहर निकलते हैं तो क्या निश्चित है कि हम लौटकर आएंगे। ये बाहर का ट्राफिक, क्या ये असुरक्षा नहीं? आए दिन हमें कोई न कोई बीमारी हो जाती है, क्या यह असुरक्षा नहीं? इतने परमाणु बम इस दुनिया में भर गए, क्या ये असुरक्षा नहीं? कौन-सी सुबह चीन या पाकिस्तान हम पर परमाणु बम छोड़ देगा? अगर हम इन विचारों में जीएंगे तो हर पल असुरक्षा है। हर पल हम इस भय में जीने लगेंगे। जो होना है वो तो होकर ही रहना है।

मैं आपसे निवेदन करूंगा ये जो पल हमारे हाथ में हैं, हम इस पल में जीना सीख लें और इस पल में जीते हुए अपने जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएं। माना कि बाहर बीमारी फैली है, महामारी फैली है, माना कि वो कभी भी हमें घेर सकती है लेकिन जब उसने घेरना होगा वो तो घेर ही लेगी। आज जब उसने अभी हमें नहीं घेरा तब भी हम उस बीमारी से कम्पित हो रहे हैं। हां, जो उपाय करने योग्य हैं जैसे आज सरकार ने लोकडाउन लगाया है, हमें घर में ही रहने का सुझाव दिया है हम वो करें। वो हमारी जिम्मेदारी है, हमारे स्वयं के लिए कि सबसे पहले हमें अपने स्वयं को, अपने जीवन को प्रेम करना है। हम ये तो नहीं करेंगे कि बाहर ट्रैफिक में सड़क पर जाकर बैठ जाएं, ये तो बुद्धिमत्ता नहीं। परमात्मा ने हमें बुद्धि दी है, हमें सोचने की शक्ति दी है उसका सदुपयोग करें। जो करने लायक है वो करे और इस पल को पूरी तरह से जीएं। हमारी संपदा इसी पल में है और याद रखना, इसी पल में से अगला पल निकल रहा है।

अगर हम इस पल में खुश होकर जीना सीख लें तो हम अगले पल में भी सुख और खुशी से जीना सीख लेंगे क्योंकि जब अगला पल आएगा वो हमारा वही पल, प्रेजेंट मोमेंट हो जाएगा। इसलिए ओशो ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात हमें सिखाई है— Live here and now, क्षण क्षण जियो, पल पल जियो। यही जीवन जीने का ढंग है। मौत तो एक दिन आनी ही है और अगर हम हर पल में खुश रहना, हर पल की जीवंतता को सीख जाएंगे तो वो पल जो हमारा मृत्यु का पल होगा हम उस पल में भी जीवंत रहेंगे।

मुझसे कई बार मित्र पूछते हैं कि मृत्यु के भय से कैसे मुक्त हुआ जा सकता है। मैं एक ही उत्तर देता हूँ तुम मृत्यु की तैयारी कर सकते हो और वो तैयारी क्या है हर पल जीने का, खुश होकर, आनंदपूर्वक जीने का एक प्रयास। न मैं जानता, न आप जानते हैं कि हमारा अगला पल क्या होने वाला है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि एक महामारी के रूप में आया है या कल हार्ट अटैक के रूप में आएगा या किसी आक्सीजन की कमी के रूप में आएगा या एक रात को हम सोएंगे सुबह उठेंगे ही नहीं। जीवन तो समाप्त होना है लेकिन वो जो समाप्त होने वाला नहीं है, मेरी आत्मा, मेरा होना मैं उसको जानूँ। क्योंकि याद रखना पल पल तभी जी पाओगे जब तुम ठहर पाओगे और जब तुम ठहरोगे तुम आत्मा के बल पर, तल पर ही ठहर सकोगे।

ठहरना सीखो, भागना नहीं। वक्त है जो भाग रहा है, इस भागते हुए वक्त में तुम ठहरना सीख जाओ। तुम पूर्ण सुरक्षा में जीओगे। क्योंकि इसी पल में, उस परमात्मा के अनुभव छुपे हैं। इसी पल में पूर्ण ज्ञान छिपा है, जिसको पाने के लिए कितने ही लोग साधना कर रहे हैं। इसको जानने के लिए कितने ही लोग इस जीवन में मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों में भागे चले जा रहे हैं। लेकिन ज्ञान है स्वयं के भीतर होना, ज्ञान है स्वयं में ठहरना।

माना कि पहली सीढ़ी के रूप में महत्वपूर्ण है ये मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर लेकिन वहां जाकर अगर सीखने योग्य हैं तो ये सीखना कैसे में झुक जाऊं, कैसे मैं अपने अहंकार से मुक्त हो जाऊं। मेरे देखे कि परमात्मा भी एक साधन है, हमें अहंकार से मुक्त करने का। ये परमात्मा को जानना भी एक साधन है, इस पल में पूर्ण रूप से आनंदित होकर जीने का। यह आत्मा और परमात्मा का ज्ञान, ये साधन है साध्य नहीं। साध्य मेरा जीवन, साध्य है मैं इसे कैसे जी रहा हूँ, साध्य है इसमें मैं कितना ठहरा हुआ हूँ, साध्य है इस पल में कितना आनंदित हूँ। इस पल में आनंदित होकर जीना सीख लो, पूर्ण सुरक्षा तुम्हारे जीवन में अवतरित हो जाएगी। क्योंकि मैं जब भी जीऊंगा तो इसी पल में जहां पूर्ण दिव्यता है, जहां वो परम सुरक्षा है, जहां वो परमात्मा का भी होना है, जहां वह स्वयं का, 'मेरा होना है।' धन्यवाद।

Offline Dhyan Programes

24-27 Feb. 2022
24Eve to 27 Noon

Shiv-Shakti Sadhana Shivir

 Osho Dhyan Mandir,
Jaipur, Rajasthan

 8302371182

5-11 Mar. 2022
5Eve to 11Noon

Bhaj Govindam Sadhana Shivir

 Osho Pyramid,
Surat, Gujrat

 9374718325, 9374710414, 7600849854

Based on Adi Shankaracharya's Teachings
<https://g.page/oshopyramid?share>

21st Mar. 2022

Osho Enlightenment day Celebration

 ONLINE + Rajneesh Dhyan Mandir,
MURSHIDPUR, Haryana

 9464247452, 9311806388,
9811064442, 9466661255,
9890341020, 8889709895



#

Online Dhyan Programes

13-19 Feb 2022

**Cosmic Realization
Meditation Retreat**

27 Feb - 5Mar 2022

**Lord Shiva's Gift -
Vigyan Bhairav Tantra**

13-19 Mar 2022

**Atma-Darshan
Sadhana**

27Mar - 2Apr 2022

Nirvaana Retreat

21st Mar. 2022

**Osho Enlightenment day
Celebration**

ONLINE + Rajneesh Dhyan Mandir,
MURSHIDPUR, Haryana

9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

ओशो फ्रेगरेंस के कार्यक्रमों के लिए अब आप स्वयं भी ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं अन्यथा नीचे दिए गए नंबर पर फोन करके भी अपना पंजीकरण करवा सकते हैं

अगर आप अपना पंजीकरण स्वयं करना चाहते हैं तो नीचे दिए गए ZOOM बटन पर क्लिक करें।

फ़ोन - 9464247452 / 9311806388



zoom



शिविर की झलकियां



गुरु हरसहाय, पंजाब में
9 जनवरी -14 जनवरी
- ओंकार साधाना शिविर

गुरु हरसहाय के प्राचीन ऐतिहासिक गुरुद्वारे में, गुरु नानक देव जी की "माला पोथी" सुरक्षित रखी हैं। ऐसे पवित्र स्थल पर उत्सव मग्न सैकड़ों साधकों ने अनूठे ढंग से ओशो की माला दीक्षा ग्रहण की। सामान्यतः साल में केवल एक बार माला पोथी के दर्शन संभव होते हैं, किंतु 11.2.22 मंगलवार को इस मंगल अवसर पर गुरुद्वारे के प्रबंधकों ने हम सबको माला पोथी के दर्शन का विशेष सौभाग्य प्रदान किया। उन्हें बहुत बहुत धन्यवाद।

b. 15 जनवरी को रोयल कानवेंट स्कूल में एक ओंकार सतनाम विषय पर सत्संग एवं प्रश्नोत्तर



खातेगांव-मध्यप्रदेश व गोवा

शिविर की झलकियां



देवास 05-02-2022

मन की शांति सिर्फ ध्यान करने से ही आ सकती है: स्वामी सरस्वती

खातेगांव-हरदा मैत्री संघ का ओशो ध्यान शिविर हुआ



खातेगांव. ओशो ध्यान शिविर में शामिल साधक व अन्य।

भास्कर संवाददाता | खातेगांव

खातेगांव-हरदा मैत्री संघ की ओर से नगर के एक गार्डन में तीन दिवसीय ओशो ध्यान शिविर आयोजित किया गया। इसका प्रतिनिधित्व सोनीपत हरियाणा से पधारे ओशो के अनुज भ्राता स्वामी शैलेंद्र सरस्वती एवं मां अमृत प्रिया ने किया। शिविर में अलग-अलग ध्यान विधियों द्वारा साधकों को आनंदमयी जीवन जीने की कला सिखाई। प्रतिदिन शाम को भजन संख्या उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया। इंदौर के भजन गायक अरुण गोयल एवं उनकी मंडली ने कबीर भजनों की प्रस्तुति दी। गांव बरवाईखेड़ा के गैर मंडल ने गुरु महिमा के गीतों पर नृत्य प्रस्तुति दी। अंतिम दिन स्वामी शैलेंद्र सरस्वती एवं मां अमृत प्रिया ने ओंकार दीक्षा प्रदान की। कार्यक्रम में स्थानीय लोगों के अलावा इंदौर, उज्जैन, होशंगाबाद, हटपिपल्या, नागपुर, शिर्डी एवं विभिन्न शहरों से आए साधकों ने भाग लिया। नए साधकों ने दीक्षा ग्रहण की। स्वामी जी ने बताया कि मन की शांति सिर्फ ध्यान करने से ही आ सकती है। उन्होंने बताया कि ओशो किसी संगठन का हिस्सा नहीं है। खास बात यह है कि ओशो कोई गुरु नहीं है। जिस तरह गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी ने खुद ही ज्ञान प्राप्त किया। इसी तरह ओशो ने भी खुद ही ज्ञान प्राप्त किया। हरदा के परसराम पटेल, नारायण मातवा, महेश बालप, राजू सोनी एवं खातेगांव के जितेंद्र सिराही, दीपचंद जाट, देवीलाल खोजा, रोहित पटेल, प्रदीप यादव, संदीप यादव आदि का सहयोग रहा।

6 से 12 फरवरी स्वामी शैलेंद्र सरस्वती एवं मां अमृत प्रिया गोवा पहुंचे ओशो संदेश साधना शिविर का संचालन करने हैं। सहयोगी आचार्य की भूमिका मस्तो बाबा ने निभाई। देशभर से विभिन्न साधक साधिका हैं सागर तट पर ध्यान एवं उत्सव के इस अद्भुत अवसर का लाभ उठाने के लिए पहुंचे



तुम आज मेरे संग हंस लो

😊 असली डर

नसरुद्दीन से उसके दोस्त ने पूछा- इतने गंभीर क्यों हो भाईजान? कोरोना की वजह से कोई प्रियजन चल बसा क्या? मुल्ला ने बताया कि प्रियजन तो कई चल बसे, मगर उनकी परवाह नहीं है। दुनिया में आवागमन तो लगा ही रहता है। इस महामारी के दौर में मुझे सर्वाधिक चिंता अपने मोबाइल की है। यदि हाथ से गिर गया, तो लॉकडाउन में कोई सुधारने वाला नहीं मिलेगा। परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त होंगे। कोई अपना मोबाइल आपको छूने भी नहीं देगा। मुझे घर के एक कोने में पुराने कपड़ों की गठरी की तरह चुपचाप पड़े रहना होगा। इस भयंकर स्थिति से ही मेरे प्राण निकलने से लगते हैं। रात को डरावना सपना आता है कि मेरा मोबाइल बिगड़ गया है, तो कांपकर उठ जाता हूँ। सांस फूलने लगती है, दिल की धड़कन बढ़ जाती है, ब्लड प्रेशर छलांगें भरता है, हार्ट अटैक की नौबत आ जाती है।

😊 डबल परेशानी

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन अपनी बीवी के साथ होटल में गया तभी एक सुंदर महिला ने मुस्कराकर नसरुद्दीन से हैलो किया।

बीवी आग बबूला होकर बोली- कौन थी वो चुड़ैल?

नसरुद्दीन- बेगम, तुम मेरा दिमाग खराब मत करो। मैं पहले ही परेशान हूँ क्योंकि वो भी यही सवाल तुम्हारे बारे में पूछेगी। वह बेचारी मासूम औरत नहीं जानती कि मैं शादीशुदा हूँ।

😊 मूल्यवान क्या?

विषादग्रस्त पति- मैं तुम्हारे संग एक दिन भी नहीं जी सकता। अमी साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगा लूंगा।

पत्नी- अजी क्या गजब करते हो, मेरी नई साड़ी है पांच हजार की!

😊 हर चीज एडवांस

एक समाज सुधारक संत ने एक आदमी को थप्पड़ मार दिया।

आदमी ने पूछा : महाराज, मैंने क्या गलती की?

संत ने समझाया : वक्त, तुम गलती करो, उसके लिए हम इंतजार थोड़ी करेंगे! गलती करने के बाद दंड देने से क्या फायदा? हम तो एडवांस पनिशमेंट देकर पाप की संभावना रोकने का प्रयास कर रहे हैं।

😊 किसके लिए?

ग्राहक : घड़ी दिखाइए।

दुकानदार : बीवी के लिए चाहिए या ब्रांडेड दिखाऊँ?

😊 नशे की कसौटी

संता : हर एक पैग के बाद अपनी जेब में क्या देखते हो?

बंता : बीवी की फोटो है यार। जब सुन्दर लगने लगती है तो इसका मतलब... दारू काफी चढ़ चुकी है और घर जाने का वक्त हो गया है!

😊 खुशी का ठिकाना न रहा!

संता : तुम्हारे होंठ क्यूँ जले हुए हैं?

बंता : उफ क्या बताऊँ यार, बीवी को मायके जाने के लिए स्टेशन छोड़ने गया था, खुशी के मारे रेल के इंजन को चूम लिया!

😊 अपराध-बोध

मुल्ला नसरुद्दीन भागता हुआ पोस्ट ऑफिस में घुसा और चिल्लाकर बोला : दो दिन से मेरी झगड़ालू दुष्ट बीवी लापता है। सर, प्लीज रिपोर्ट लिखिए।

पोस्ट मास्टर : यह पोस्ट ऑफिस है। भाई साहब, पुलिस थाने जाओ।

नसरुद्दीन : ओह साँरी, कहाँ जाऊँ, खुशी के मारे कुछ समझ नहीं आ रहा! और दूसरा कारण यह है कि पांच साल पहले एक बार और वह मेले में खो गई थी। तब थाने में रिपोर्ट लिखाई थी। वो साले, पुलिस वाले चार घंटे में उसे खोजकर ले आए थे। अब भूलकर भी वहाँ न जाऊंगा।

पोस्ट मास्टर : जब तुम उसे वापस पाना ही नहीं चाहते तो रिपोर्ट लिखाने यहाँ भी क्यों आए हो?

मुल्ला नसरुद्दीन : सर, अगर रिपोर्ट न लिखवाऊंगा, तो 'गिल्ट फीलिंग' होगी। अपराध-बोध महसूस होगा। आप लिख लीजिए न! मुझे तसल्ली हो जाएगी!

😊 शादी का निमंत्रण पत्र

आज एक शादी का निमंत्रण पत्र आया

पढ़कर मस्तिष्क 'चक्रम-चक्रम' हो गया--

☑ सपरिवार ना पधारें, अकेले ही आने का कष्ट करें।

☑ स्वच्छता का ध्यान रखें।

☑ अपना मुख आवरण कतई ना हटाएँ।

☑ अनावश्यक किसी वस्तु को हाथ न लगाएं।

☑ वर-वधु को आशीर्वाद दूर से ही दें।

☑ उनके समीप आकर चित्र खिचवाने का प्रयास न करें।

☑ प्रत्येक स्थान पर सामाजिक दूरी बना कर रखें।

☑ शर्मा जी को व्यवहार का पैसा दूर से देकर पावती लेकर या ऑनलाइन भुगतान का चित्र दिखाकर, वर्मा जी से भोजन का थैला प्राप्त करें व घर जाकर शांतिपूर्वक भोजन का स्वाद लें।



कुछ गीत स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी की डायरी से

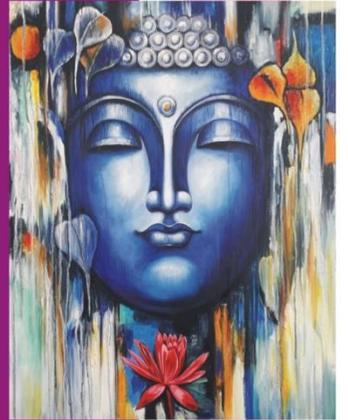
पृथ्वी को स्वर्ग बनाना है

हमें मुक्ति नहीं पाना है, मिट्टी में मोक्ष उतारना है;
 एक शाख नहीं, एक तरु नहीं, सारे उपवन को सजाना है।
 लाना है वसंत पूरे वन में, पृथ्वी को स्वर्ग बनाना है।। पृथ्वी को...
 फूल खिलें हर क्यारी में, तितलियां उड़ें फुलवारी में
 नित नई कोंपलें फूटें, उठ आसमान को छू लें।
 चूमें चांद-सितारों को, ऐसी उंचाईयां पाना है।। पृथ्वी को...
 जब तक दम है बांहों में, बाधा न मिलेगी राहों में
 असली यौवन तो होता है आशाओं-उत्साहों में।
 आओ सीखें सरिता से, कैसे सागर तक जाना है? पृथ्वी को...
 अंधियारे से क्या डरना, मरने के पहले क्यों मरना!
 जीना तो नाम है साहस का, संकल्प सहित आगे बढ़ना
 दुख की रात भले लंबी हो, सुख का सूर्य जगाना है।। पृथ्वी को...
 देशों की कोई सीमा न हो, बंटी हुई धरती मां न हो
 कृष्ण-मुहम्मद-ईसा अपने, हों साकार बुद्धों के सपने।
 सत्य न हारे, अशिव न जीते, ऐसी पवन बहाना है।। पृथ्वी को...
 अल्ला-ईश्वर में भेद न हो, मंदिर-मस्जिद पर खेद न हो
 प्रेम के ढाई आखर से, बढ़कर बाइबिल-वेद न हो।
 जहां प्रेम कर्म हो, प्रेम धर्म; ऐसा संसार बसाना है।। पृथ्वी को...
 अधरों पर मुस्कान रहे, जीवन एक वरदान लगे
 स्वाभिमान हो चेहरों पर, वाणी से अमृत ज्ञान बहे।
 कण-कण में भगवान दिखे, हमें ऐसी आंखें पाना है।। पृथ्वी कोकृ



ओशो के रंग में सब रंग दै

रंग दे, रंग दे, मेरा मन रंग दे
 ओशो के रंग में मन रंग दे।
 मन रंग दे, चैतन्य रंग दे, इंद्रधनुष के सब रंग दे।।
 ओशो के रंग में सब रंग दे।
 कृष्ण सरीखी अनासक्ति दे, रामकृष्ण जैसी भक्ति दे।
 दादू दरिया के संग कर दे।।
 पातंजलि का योग सिखा दे, राजा जनक सा भोग दिखा दे।
 सूफी फकीरों का ढंग भर दे।।
 गौतम बुद्ध का ध्यान बता दे, अष्टावक्र सा ज्ञान जगा दे।
 दास कबीरा सी चादर दे।।
 लाओत्से वाली दृष्टि दे, नानक की मतवाली मस्ती दे।
 मीरा के घुंघरु का स्वर दे।।
 गोरख-विधि, शिव का तंत्र दे, अनाहत गूंज, नमोकार मंत्र दे।
 हंसते-खेलते धर्म सधे।।
 रंग दे, रंग दे, मेरा मन रंग दे
 ओशो के रंग में मन रंग दे।



महापरिनिर्वाण दिवस पर विशेष



सुनिए ओशो का यह संदेश-



ओशो ने किया है वादा

भगवान बुद्ध के संबंध में कथा है कि वे मोक्ष के द्वार पर पहुंचकर, भीतर प्रवेश नहीं किये। वे करुणाविश रुके गये, जब तक कि सारे लोग न आ जाएं।

इसी संदर्भ में किसी शिष्य ने पूछा कि क्या आप भी इसी प्रकार हमारी राह देखेंगे?

ओशो ने अत्यंत प्रेम से कहा-

तुम मुझसे पूछ रहे हो, क्या मैं भी तुम्हारा इंतजार करूंगा? मैं तुम्हारा इंतजार कर ही रहा हूं, और आगे भी इंतजार करता रहूंगा; चाहे शरीर में अथवा शरीर के बाहर।

जिन लोगों से मैंने प्यार किया है, जिन्होंने अपना हृदय मेरे लिए खोल दिया है, वे लोग जिन्होंने भक्ति के खतरनाक मार्ग की जोखिम उठाई है, जो तलवार की धार पर चल रहे हैं, निश्चित रूप से उनके लिए मैं अनंत काल तक प्रतीक्षा करूंगा।

जिन्होंने मुझे प्रेम किया है, जिन्होंने मेरा प्रेम गहण किया है, मैं उनके लिए प्रतिबद्ध हूं। मैं देह में बने रहने के लिए यथासंभव प्रयास करूंगा, और भले ही मुझे शरीर छोड़ना पड़े, तब भी मैं सब कुछ करूंगा, तुम्हारे चारों ओर निरंतर मौजूद रहने के लिए। तुम मुझे देख नहीं पाओगे, लेकिन मैं तुम्हें देख पाऊंगा।

बस याद रखना, मुझे निराश मत करना।

-ओशो, 'दि रेबेल' के प्रवचन-27 से



अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र



Osho fragrance Numbers -

9464247452, 9311806388, 9811064442, 9466661255,
9890341020, 8889709895



Youtube page - Rajneesh Fragrance



Facebook page - Rajneesh Fragrance



Instagram - Osho Fragrance



Twitter - Rajneesh Fragrance



oMeditate App -

Osho Fragrance's Mobile App

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on the below link-

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Now you can listen to Osho Fragrance Music, Discourse etc anywhere, anytime on popular platforms of Podcast like Spotify & Gaana.



Spotify -



Gaana -



Download Osho Hindi & English Books from the link -



contact@oshofragrance.org

